मेरी रचना कितनी सुन्दर

अंक 4, अक्टूबर 2021

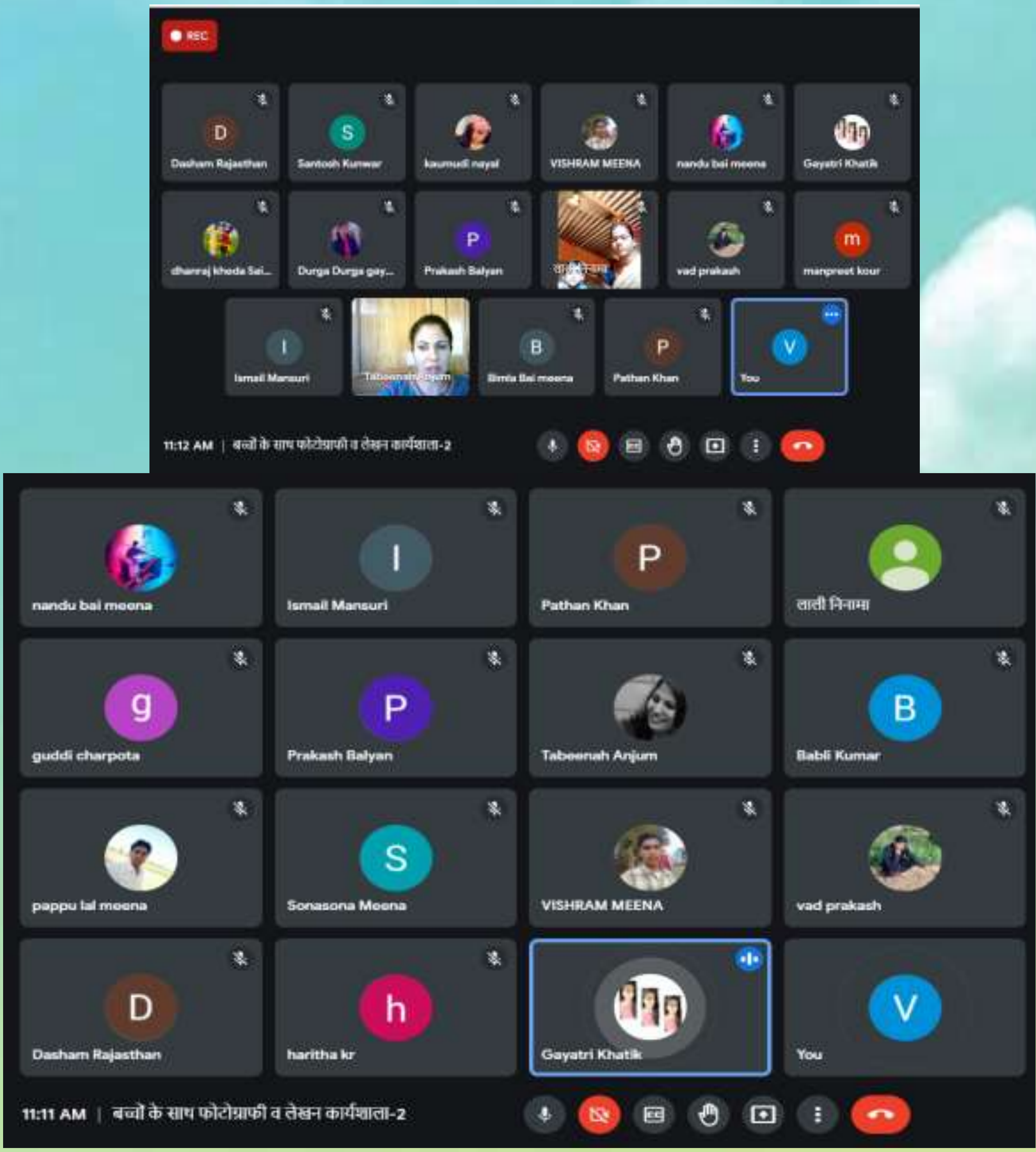

रिसोर्स इन्स्टीट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स, राजस्थान

संदर्भ व्यक्ति व मुख्य प्रशिक्षक :

डॉ. तबीनाह अंजुम कुरैशी (सीनियर जर्नलिस्ट आउटलुक पत्रिका)

मार्गदर्शन एवं परिकल्पना :

अंकुश सिंह, यूनिसेफ, राजस्थान
विजय गोयल, रिसर्च इंस्टिट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स
(आर.आई.एच.आर.)

संपादक :

मनीष सिंह, मंजरी संस्थान, बूंदी

सहयोग :

ओम प्रकाश - ग्राम चेतना केंद्र
शिव सिंह नयाल - अंताक्षरी
रामेश्वर लाल जाट - अंताक्षरी
राजन चौधरी - शिक्षा रोजगार केन्द्र प्रबंधक समिति, झूंझनू
शिवजी राम यादव - शिव शिक्षा समिति

विश्लेषण एवं लेखन :

कौमुदी - दशम एलाइंस
तरूणा - स्नेह आंगन
(विभिन्न संस्थाओं के बच्चे)

प्रकाशन :

दशम एलाइंस के द्वारा यूनिसेफ के सहयोग से
आर.आई.एच.आर.के माध्यम से प्रसारित

ग्राफिक डिजाईनर :

आयुष कम्प्यूटर्स एण्ड टाइपिंग इंस्टिट्यूट
9414941489, 8890870215

भूमिका

शिक्षा की ओर बढ़ते कदम, फिर मुड़ गए जिम्मेदारी की ओर

एक दिन ऐसा आयेगा, फिर चल पड़ेंगे स्कूलों की ओर।

पिछले डेढ़ साल से बच्चे अपने स्कूलों से, खेल के मैदानों से, अपने दोस्तों से बहुत दूर हो गए थे। अगस्त 2021 के बाद जब प्रदेश में कोरोना का प्रकोप कम होने लगा, बच्चों के कदम वापस स्कूल की ओर बढ़ने की आशा जगी दूसरी ओर बच्चे अपने कोरोनाकाल में बिताए गये कुछ अच्छे पलों को (परिवार के साथ मस्ती, नये पकवानों को तैयार करना, भाई बहनों के साथ खेल-कूद) जैसी कई यादों को कन्धे में लिए किताबों की खुशबू के साथ स्कूलों की ओर खुशी खुशी जा रहे है।

बच्चों में हमेशा से सीखने और विकास की प्रक्रिया स्वाभाविक रही है। इन कार्यशालाओं में बच्चों के लिए अपने आस-पास के वातावरण को देखना, उसे अनुभव करना और उसको फोटोग्राफी और कहानी के माध्यम से चित्रांकित करना मजेदार रहा। इन कार्यशालाओं में 187 बच्चों ने फोटोग्राफी और लेखन के बारे में जाना और कार्यशाला में सीखी गयी सभी बातों को कहानी, कविताओं और अपने द्वारा खींची गयी तस्वीरों के माध्यम से हमें अपने आस-पास के वातावरण के बारे में बताया। इससे उन पर पड़ने वाला प्रभाव दिखाई देता है।

कार्यशाला में 17 जिलों के 22 संस्थाओं के 187 बच्चों ने अपनी पूर्ण रूप से भागीदारी रखी। इसमें 15% बच्चे ऐसे थे जिनके एक या दो सत्र छूट गये उन्होंने अन्य सत्रों में जुड़कर सीखने की प्रक्रिया को जारी रखा। कार्यशाला में सिखाये गये तरीकों को बच्चों ने बखूबी अपनी कविता, कहानियों और तस्वीरों के माध्यम से दिखाया।

इस अंक में चौथी, तीसरी, दूसरी व पहली कार्यशाला के दौरान बच्चों द्वारा लिखी गई कहानी व कविताएं तथा फोटोग्राफ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

पाठकगण अपनी प्रतिक्रियाएं भेजेंगे तो खुशी होगी।

कौमुदी - दशम एलाइंस

संपादक की कलम से

कोरोना ने हम सबकी जिंदगी को और जीवन के हर पहलू को बुरी तरह प्रभावित किया है। हताशा और निराशा के इस लम्बे दौर में हमनें बहुत कुछ खोया.... अपनों को और अपने सपनों को भी!

बहरहाल, बच्चों की अपनी अनोखी दुनियां होती है। कोरोना के लम्बे दौर में भी बच्चों ने अपनी इस दुनिया के रंगों को फीका नहीं पड़ने दिया... अपनी उर्जा और क्रियाशीलता से हमेशा जीवंत बनाए रखा।

राजस्थान बाल संरक्षण साझा अभियान ने कोरोनाकाल में बच्चों के लिए फोटो के माध्यम से कहानी कहने की कला पर कुछ कार्यशालाओं का संयोजन किया। बच्चों ने छायाचित्रों के माध्यम से अपने आसपास की दुनिया में झांका और उन्हें जो कुछ भी दिखा उसे उकेर दिया।

प्रस्तुत है बच्चों की नज़र में दुनिया या कह लें बच्चों की दुनियां के अनोखे रंग....

आशा है आपको यह संस्करण पसंद आएगा।

मनीष सिंह

विषय सूची

शीर्षक	लेखक - संस्था का नाम	पेज नं॰
शकरकंद और मेरे आंसू	गायत्री खटीक - राजसमन्द जन विकास संस्थान,	1
गुरू	गौरी सोनी - स्माइल लर्निंग सेन्टर, जयपुर	3
समझदारी	हिमांशी शर्मा - ग्राम चेतना केन्द्र	4
मेरी दुनियां	पार्थ बैरवा - जन चेतना संस्थान, आबू रोड़	6
कोरोना का कहर	हर्षिता यादव - ग्राम चेतना केन्द्र	7
कोरोना के दौरान भेदभाव	ऋषभ शर्मा - शिव शिक्षा समिति, टोंक	8
लॉकडाउन में पशुओं से लगाव	गजल चौहान - उरमूल सीमान्त समिति, बज्जू	9
चिड़िया	प्रियंका भावरीया - अन्ताक्षरी फाउण्डेशन	10
आर्थिक स्थिति पर प्रभाव	मिलन चौहान - उरमूल सीमान्त समिति, बज्जू	11
शाम का अहसास	नगीना यादव - आर.आई.एच.आर.	12
पायल की बकरी	मनिषा चौधरी - अंताक्षरी फाउंडेशन	13
जलेबी	लाली निनामा - गायत्री सेवा संस्थान	14
कोरोना और लॉकडाउन का हमारे जीवन पर प्रभाव		15
बच्चों द्वारा खींची गयी तस्वीरें		16
कार्यशाला-4 में प्रतिभागी बच्चों के नामों की सूची		28
कार्यशाला में जुड़ी सहयोगी संस्थाओं का परिचय		30

शकरकंद और मेरे आंसू

सर्दी के दिन आएं और मेरे घर पर शकरकंद ना आए ऐसा कभी नही होता क्योंकि शकरकंद मुझे और मेरे पापा को बहुत पसन्द हैं। इसलिए जब भी पापा बाजार जाते तो बाजार से बढ़िया शकरकंद ढूंढ कर लाते। बाजार जाते हैं तो ज्यादा समय इनको खरीदने में लगा देते हैं। सुबह-सुबह जब मैं उठी तो मैंने देखा कि टोकरी में शकरकंद पड़े हैं क्योंकि रात को ही पापा लाये थे और तब मैं सोई थी।

शकरकंद को घर आए हुए दो-तीन दिन हो गए लेकिन किसी ने इन्हें बनाकर खाने की नही सोची तभी मैंने सोचा कि आज मैं ही शकरकंद बनाकर खा लेती हूं। फिर मैं किचन में गई और कढ़ाई गैस पर रखी जैसे ही गैस चालू किया तो देखा कि सिलेंडर तो खाली था।

फिर मुझे एक सुझाव आया कि छत पर चूल्हा है क्यों न आज शकरकंद चूल्हे पर बनाए जाएं। सिलेंडर खाली हो गया था तो चूल्हे पर घर में से किसी ने चाय बनाई थी। चूल्हे में पहले से अंगारे थे इसलिए चूल्हा जलाने में मुझे ज्यादा दिक्कत नही हुई।

फिर मैंने शकरकंद को धोया, एक कढ़ाही में पानी डाल कर शकरकंद उसमें डाल दिए तब चूल्हा बराबर जल रहा था फिर मैं बालकनी में घूमने लगी।

तभी मेरी नजर पीयूष पर पड़ती है, पीयूष आठ साल का लड़का है। जो कि मेरे घर के सामने ही रहता है।

वो कुछ समय से गुजरात रह रहा था लेकिन कोरोना वायरस के कारण उसके पापा का काम नही रहा तो वो और उसका परिवार राजस्थान वापस आ गये। जब मैं छत पर थी तो वो भी छत पर ही खेल रहा था।

जब लॉकडाउन नही था तो पीयूष राजस्थान आता था और मेरे घर पर ही खेलता रहता था। लेकिन कोरोना वायरस के कारण पीयूष अब मेरे घर पर नही आ सकता था।

जब मैं पीयूष से बातें कर रह थी तो इतनी देर में मैंने देखा कि चूल्हे पर आग तो बुझने को आई और चारों तरफ धुआं-धुआं हो गया उस कारण से मेरी आंखों में आंसू आ गए आंख मानों लाल रंग की हो गई।

एक तरफ तो आंसू आ रहे थे लेकिन मुझे तो शकरकंद खाने थे। फिर भी बंद आखों से मैंने शकरकंद बड़े चाव से खाये। यह सब देख मेरे परिवार वाले जोर जोर से हंसने लगे।

गायत्री खटीक

गुरू

कभी डांट से कभी प्यार से, निरक्षर से साक्षर हमें बनाते।

कभी सख्त तो कभी नरम बन, जीवन जीना हमें सिखाते।

चाहे मार्ग हो कितना भी दुर्गम, सिखाते कला बनाने की उसे सुगम।

दूर कर हमारी अनेक कमियां, ला देते हैं हमारे अन्दर अनेक खूबियां।

कभी माता पिता बन संस्कार सिखाते, तो कभी मित्र बन हौंसला बढ़ाते।

कामयाबी के सफर में कभी हमारे लिए कड़ी धूप बन जाते हैं,

क्योंकि वह जानते हैं कि मिल जाती है छांव तो कदम रूक जाते हैं।

इस तरह लक्ष्य के शिखर तक हमें पहुंचाते,

वह हमारे प्रेरणादायक गुरू कहलाते हैं।

मिल जाता है अगर उनका आर्शीवाद,

होता है वह जीवन का सबसे बड़ा प्रसाद।

मेरे गुरू ही है मेरा गुरूर, करूं मैं उनका नाम रोशन दूर दूर।

करते जो सदा गुरू का सादर वंदन,मिलता है उन्हें ज्ञान का अमूल्य चंदन।

होता है उनका सभी जगह अभिनन्दन, अतुल्य है गुरू और शिष्य का बधंन।

गौरी सोनी

समझदारी

एक होनहार और मेधावी, 13 साल की लड़की मेघा जो रोज स्कूल जाती थी। वह 7वीं कक्षा में पढ़ती थी। उसकी मां घर के काम करती थी और उसके पिता एक छोटी सी परचून की दुकान चलाते थे।

उसके पिताजी बहुत मेहनती थे। वह अपनी छोटी-सी दुकान को भी बहुत अच्छे से चलाते थे और उस कमाई से अपनी बेटी को पढ़ाते और अपना घर खर्च चलाते थे। मेघा के माता-पिता खेतीबाड़ी भी करते थे।

अचानक से देश में एक खतरनाक बीमारी का आवागमन हुआ। सभी लोग कहने लगे ये कोई खांसी, बुखार जैसी बीमारी नहीं है लेकिन यह बीमारी खांसी-बुखार से ही होती है जिसे भी यह बीमारी हो उसकी जान नहीं बचती है। उस बीमारी का नाम कोविड-19 यानि कोरोना वायरस है। ये किसी चीन नामक देश से आई है। इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है। धीरे-धीरे यह बीमारी बढ़ने लगी और इसका कोई ईलाज भी नहीं था। सरकार ने भी इस महामारी से परेशान होकर धीरे-धीरे दुकाने बंद करवाना शुरू कर दिया।

यह सुन कर डर के मारे मेघा के पापा ने भी दुकान बंद कर दी और धीरे-धीरे उनके पास पैसे खत्म होते जा रहे थे और उनकी जो भी जितनी भी बचत थी वह भी धीरे-धीरे कम होने लगी। उसके ऊपर से मेघा के स्कूल की फीस जमा कराने की तिथि नजदीक आने लगी। उसके पिताजी ने जैसे-तैसे कुछ सामान उधार रखकर अपनी बेटी की स्कूल फीस जमा करा दी। देश में पूरी तरह से लॉकडाउन लग गया, बाहर निकलना बंद हो गया। मेघा घर में रहते रहते परेशान हो गई थी।

साथ में खेलने के लिए दोस्त भी नहीं थे। दूसरों को देखते-देखते वह भी धीरे-धीरे अपने पापा का फोन चलाने लगी और उसमें नये-नये खेल-खेलती थी।

धीरे-धीरे उसे इन मोबाइल में खेले गये खेलों की आदत लग गई। उसके स्कूल वालों ने ऑनलाइन पढ़ाई शुरू कर दी और उसने भी ऑनलाइन पढ़ना शुरू कर दिया लेकिन उसका मन ऑनलाइन खेल में ही लगा रहता था।

वह अपनी ऑनलाइन पढ़ाई को चालू करके एकतरफ ऑनलाइन खेल खेलती थी। इससे उसकी पढ़ाई का बहुत नुकसान हो गया था।

धीरे-धीरे कोरोना वायरस कम होने लगा और स्कूल, दुकाने सब खुलने लगे। मेघा का मन स्कूल से ज्यादा फोन में लगा रहता था लेकिन वह फिर भी सबको दिखाने के लिए स्कूल जाती थी और उसके अध्यापक उससे कुछ पूछते तो वह उसका गलत जवाब देती थी। ऐसा बहुत दिनों तक चला लेकिन फिर उसका फोन चलाना धीरे-धीरे कम हो गया और उसे समझ आ गया कि फोन से ज्यादा स्कूल जरूरी है और खेल से ज्यादा पढ़ाई जरूरी है।

हिमांशी शर्मा

मेरी दुनियां

कभी जो गुस्से में आकर मुझे डांट देती,

जो रोने लगूं मैं मुझे वो चुप कराती।

जो मैं रूठ जाऊं मुझे वो मनाती,

मेरे कपड़े वो धोती मेरा खाना बनाती।

जो न खाऊं मैं मुझे अपने हाथों से खिलाती,

जो सोने चलूँ मैं मुझे वो लोरी सुनाती।

वो सबको रुलाती वो सबको हंसाती,

वो दुवाओं से सबकी बिगड़ी किस्मत बनाती।

और बदले में वो किसी से कभी कुछ न चाहती।

जब बुढ़ापे में उसके दिन ढ़लने लगते,

हम खुदगर्ज चेहरा अपना बदलने लगते,

एश-ओ-हसरत में अपनी उसको भूलने लगते।

दिल से उसके फिर भी सदा दुआएं निकलती है,

खुशनसीब हैं वो लोग जिनके पास माँ होती है।

पार्थ बैरवा

कोरोना का कहर

एक गांव में कालू और उसका परिवार रहता था। कालू के परिवार में उसकी पत्नी रमा और बेटा प्रेम और बेटी रिया रहते थे। उस समय गांव में कोरोना महामारी चल रही थी, पर कालू कोरोना महामारी को मजाक समझता था। कालू की एक किराना की दुकान थी। कालू लॉकडाउन में भी चोरी-चोरी दुकान पर जाता था और ज्यादा मंहगे दामों में राशन बेचता था।

एक दिन कालू को पुलिस ने पकड़ लिया। थोड़े दिन बाद जब कालू छूट गया तो फिर भी कालू नहीं माना। वो चोरी छिपे घर से दुकान चलाने लगा। एक दिन कालू के पास कोरोना पीड़ित व्यक्ति राशन लेने आया फिर आदमी ने जो मांगा वह कालू ने उसे दे दिया पर देते समय कालू का हाथ उस आदमी से लग गया और उस व्यक्ति को पहले कोरोना हो चुका है इस बारे में कालू को पता भी नही था।

कुछ दिन बाद कालू को खांसी जुखाम हुआ और उसे समझ नही आया कि उसे क्या हो गया। दूसरे दिन गांव में कैम्प लगा था कालू को उसका परिवार डॉ. के पास ले गये तो कालू और उसके परिवार के सदस्यों की रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव निकली और यह बात उनकी पड़ोसन बबली को पता चली। बबली ने यह बात पूरे गांव में फैला दी। जब कालू और उसका परिवार अपने घर वापस जा रहे थे सभी लोग उनसे डरने लगे दूर रहने लगे। कालू के घर में मानो जैसे कोई पहाड़ टूट पड़ा हो फिर कुछ दो-तीन हफ्तों बाद उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई। धीरे-धीरे उसके पूरे परिवार में सभी की मृत्यु हो गई। कालू की एक छोटी सी गलती के कारण उसका परिवार तबाह हो गया।

हर्षिता यादव

कोरोना के दौरान भेदभाव

राजस्थान के टोंक जिले के एक छोटे से गांव में सुमित्रा देवी नाम की महिला अपने परिवार के साथ रहती थी। कोरोना महामारी के दौरान एक नजदीकी रिश्तेदार की शादी में जाने के बाद उन्हें खांसी एवं बुखार होने लगा। स्थानीय स्तर पर उन्होंने इसका इलाज भी करवाया साथ ही जिला अस्पताल में कोरोना की जांच भी करवाई जिसका परिणाम वह पॉजिटिव आ गई। यह खबर स्थानीय सरकारी अस्पताल के लोगों ने सबको बता दी। गांव में आकर सुमित्रा देवी एवं उनके परिवार को होम क्वारन्टाइन कर दिया एवं उल्लंघन करने पर कानूनी कार्यवाही का नोटिस दे दिया। गावं में यह पहला मामला था तो लोगों ने बातें बनाना शुरू कर दिया कि इनको तो पुलिस पकड़ कर ले जायेगी, अस्पताल में रखेंगे। जीवित वापस नहीं आयेंगे इत्यादि। गांव वालों एवं पडोसियों ने सुमित्रा देवी और उनके परिवार से बात करना बंद कर दिया। यहां तक की गली में आना जाना भी बंद कर दिया। दूध लेने जाते तो दूध वाला बर्तन को बहुत दूर रखवाता और किसी वस्तु से दूर से दूध देता, पास के बांव में स्थित किराना, मेडिकल व सब्जी वाले ने उन्हें सामान देने से मना कर दिया। चूंकि इतना सामान घर में नहीं था तो बहुत मुश्किलें होने लगी। आस पड़ोस के लोगों से मदद मांगने पर भी उन्हें कोई मदद नहीं मिली। इस दौरान सुमित्रा देवी एवं उनके परिवार को जिस सामाजिक बहिष्कार का मुश्किलों का सामना करना पड़ा वह बहुत असहनीय था। उनके परिवार ने सफाई और स्वास्थ्य का बहुत ध्यान रखा अन्ततः उनके परिवार के सभी सदस्यों की कोरोना रिपोर्ट नेगेटिव आने के बाद उन्हें फिर भी समाज द्वारा 2 माह तक बहिष्कार का सामना करना पड़ा।

हमें बिमारी से लड़ना है बिमार से नहीं'' अपने आस-पास कोई कोरोना पॉजिटिव आ जाये तो सुरक्षा निर्देशों की पालना के साथ उसकी मदद करें। उसे भी प्यार, सम्मान एवं बिमारी से लड़ने के लिए हौसले की जरूरत है।

ऋषभ शर्मा

लॉकडाउन में पशुओं से लगाव

हमारे परिवार में कुल सात पशु हैं जिसमें एक गाय, एक भैंस उनके एक-एक बच्चे, एक बकरी और उसके दो छोटे बच्चे हैं। इन सबकी देखरेख मेरी मां किया करती हैं।

लॉकडाउन के कारण हम परिवार के सभी सदस्य घर पर रहने लगे। मां का काम और भी बढ़ गया। शुरू में काम को लेकर हम भाई बहनों में झगड़ा होता था। मां अकेले सारा काम कर के थक जाती थी वो पशुओं की देखभाल करतीं, हम सभी के लिए खाना बनाती, और घर के अन्य काम भी संभालतीं थी।

कुछ समय बाद मां थोड़ा बिमार रहने लगी। हम सभी ने फिर तय किया कि मिल कर मां की मदद करेंगें। हम सबने पशुओं की देखभाल करना शुरू किया और साथ ही घर के काम में भी मां की मदद करने लगे। सभी पशुओं को समय पर चारा, पानी मिलने लगा।

पहले मां अकेली घर का सारा काम करती थी जिस कारण पशुओं को चारा समय पर नही मिल पाता था। पशु माता की तरफ देखते रहते और सोचते कि कब पानी मिलेगा, कब छांव मिलेगी।

अब लॉकडाउन की वजह से घर में सभी सदस्यों की मौजूदगी से मां घर का काम संभालती और हम पशुओं पर ज्यादा ध्यान देने लगे। उन्हें समय पर चारा खिलाना, पानी पिलाना, स्नान करना, छांव में बांधना, समय पर सभी चीजें मिलने के कारण दूध पहले से ज्यादा मिलने लगा।

हमारे पास एक बकरी है जिसका नाम झलनी है और उसने लॉकडाउन के दौरान दो बच्चों को जन्म दिया। वो बहुत ही प्यारी और सुन्दर हैं और हमारे साथ उछल कूद भी करते हैं। इस दौरान पशुओं के साथ खेलने और उनका ध्यान रखने के कारण लॉकडाउन में हमें उनसे पहले से ज्यादा लगाव हो गया।

गजल चौहान

चिड़िया

नन्ही-मुन्ही चिड़िया हूं मैं, बागों में जाती हूं,
दाना-पानी लाती हूं, कंठ खोल के रस से गा लेती हूं
चिड़ियां हूं मैं चिडिया हूं मैं नन्ही-मुन्ही चिड़िया हूं।।

पीले पंखों वाली चिड़िया हूं मैं
चोंच मारकर जब मोती को ले जाती हूं
चिडिया हूं मैं चिडिया हूं मैं नन्ही-मुन्ही चिड़िया हूं ।।

चंचल दिल है मेरा छोटे मुंह वाली हूं,
तीखी है चोंच मेरी, रंग बिरंगे पंखों के संग
चिडिया हूं मैं चिडिया हूं
मैं नन्ही-मुन्ही चिड़िया हूं।।

प्रियंका भावरीया

आर्थिक स्थिति पर प्रभाव

तहसील कोलायत जिला बीकानेर का रहने वाला एक परिवार जहां 4 बच्चे और उनकी मां लीला एक साथ रहते थे। उनके पिताजी को गुजरे हुए 25 वर्ष हो गये थे। पिता के गुजरने के बाद बच्चे पढ़ाई से वंचित हो गये और लीला का एक बड़ा लड़का सूरज 8वीं तक ही पढ़ सका। क्योंकि उसके पिताजी की मृत्यु के बाद घर की जिम्मेदारी बड़े लड़के पर आ गई थी।

इस वजह से सूरज अपनी पढ़ाई छोड़ कर अपने गांव से दूर शहर में किराना की दुकान पर काम करने चला गया। लीला और उसकी बड़ी बेटी दोनों गांव से 15 किमी दूर बजरी की खान पर मजदूरी करने चले गये। सूरज के दो छोटे भाई और थे वह घर पर ही रहते थे।

22 मार्च 2020 को पूरा परिवार कोरोना महामारी के चलते घर में कैद हो गया। यह परिवार रोजाना मजदूरी करके अपने घर का पालन पोषण करता था। लॉकडाउन की वजह से घर की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर हो गई घर में राशन पानी आना बंद हो गया।

लॉकडाउन की वजह से घर का राशन खत्म हो गया। कुछ दिन दुकानों से राशन उधार लेकर परिवार ने गुजारा किया। परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी उनके पास रहने को सिर्फ एक कच्चा मकान था। इस परिवार की दयनीय स्थिति को देखकर गांव के लोगों ने ग्राम पंचायत से, संस्था से, दानवीरों से इस परिवार को राशन उपलब्ध करवाया।

शिक्षा : आपातकालीन स्थिति में हमें गरीब परिवारों की मदद करनी चाहिए।

मिलन चौहान

शाम का अहसास

शाम बड़ी सुहानी होती है,

सबके मन को भाने वाली होती है।

आसमान में लाली होती है,

चारो ओर रंग खिलाती है।

शाम होते ही पक्षी घर को जाते है,

सवेरा होते ही दाना चुगने जाते हैं।

लोग घूमने के लिए घरों से बाहर आते हैं,

और प्रकृति की मनोहर सुंदरता को देख प्रफ्फुलित हो जाते हैं।

नगीना यादव

पायल की बकरी

एक गांव में पायल नाम की बच्ची रहती थी। उसके पास बहुत सारी बकरीयां थी जिसमें से एक बकरी ने एक मेमने को जन्म दिया। पायल ने उस मेमने का नाम फूला रखा। फूला की मां उसे जन्म देते ही मर गई। जिसकी वजह से पायल को बहुत दु:ख हुआ क्योंकि वह उस छोटी बकरी को दूध नहीं पिला पायी। इसलिए उसके पास जो और बकरियां थी वह उनका दूध निकालकर उस बकरी को बोतल से दूध पिलाया करती थी। जब वह धीरे-धीरे बड़ी होने लगी तो वह पायल के पास ही रहने लगी। पायल उसको अपने पास ही सुलाती व उसका बहुत ख्याल रखती थी। वह उसे चारा, पानी और दाना सही वक्त पर खिलाती थी। एक बार पायल की बकरी बहुत बीमार हो गई जिस कारण पायल बहुत परेशान हो गई। लॉकडाउन के दौरान फूला पायल के लिए एक मात्र दोस्त थी। पायल फूला के ईलाज के लिए अपने गांव के निजी अस्पताल के डॉक्टरों के पास गई लेकिन वहां फूला का ईलाज सही तरीके से नही हो पाया। इसलिए वह शहर के बड़े अस्पतालों में फूला को ले कर गई। वहां फूला का अच्छी तरह से ईलाज हुआ, जिससे वह कुछ दिनों बाद ठीक हो गई। पायल अपनी बकरी को ठीक होते हुए देख और उछल कूद करते हुए देख बहुत खुश हुई। फूला पायल के लिए परिवार का एक सदस्य थी। फूला स्वस्थ होने के बाद अपने परिवार के साथ खुशी खुशी रहने लगी।

शिक्षा :- हमें भी अपने जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए और उनका ख्याल रखना चाहिए जिससे वह खुश रह सकें।

मनिषा चौधरी

जलेबी

देखी जबसे गोल जलेबी
मन है डाँवाडोल जलेबी
घी के अन्दर गिर यह फूली
उसके ऊपर तैरी झूली
नहा चाशनी में इठलाई
थाली में यह सज धज आई
भरी चाशनी मीठी-मीठी
अंदर पोलम पोल जलेबी
देखी जबसे गोल जलेबी
मन है डाँवाडोल जलेबी
गणपत, अक्षय, चित्रा, आओ
शीला, सुषमा, प्रज्ञा खाओ
छोटे बड़े सभी को भाए
बूढ़े और युवा ललचाए
ऐसी है अनमोल जलेबी
मीठी मीठी गोल जलेबी।

लाली निनामा

कोरोना और लॉकडाउन का हमारे जीवन पर प्रभाव

सकारात्मक	नकारात्मक
वातावरण में प्रदूषण का स्तर कम हुआ	स्कूली शिक्षा का नुकसान हुआ
रोड एक्सीडेंट कम होने लगे	चोर डकैती का स्तर बढ़ा
लोग घर की सफाई, स्वस्थ दिनचर्या पर ध्यान देने लगे	बेरोजगारी बढने लगी
गुटखा/शराब आदि सप्लाई पर रोक की गई। लोगों को नशे इत्यादि आदतों से छुटकारा मिला।	अचानक लॉकडाउन के कारण प्रवासी मजदूरों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ा।
कोविड-19 से हमें मोबाइल का महत्व पता चला, जैसे कि मोबाइल पढ़ने हेतु भी काम में आता है।	कोविड-19 के दौरान बहुत लोगों की मृत्यु हुई और कई लोगों की नौकरी भी गई।
खुद को नई चीजों से जोड़ा जैसे - व्यंजन बनाना, डांस करना, व्यायाम करना।	बच्चे मोबाइल का इस्तेमाल ज्यादा करने लगे।
परिवार में सभी सदस्यों के एक साथ रहने से प्रेम का व्यवहार बना। एक साथ रहने का अवसर मिला।	कोविड के दौरान लोगों की मौत हो गई कितने घर उजड़ गए। एक ऐसी मौत जिसे ना घर वाले हाथ लगा सकते थे ना ही देख सकते थे।
बाजारों में व सड़कों पर कचरा जमा नहीं हुआ। इसके कारण पर्यावरण पर काफी स्तर तक सफाई रही।	कोरोना महामारी के दौरान थोक व रिटेल व्यापारियों ने (दुकानदारों) ने खाद्यान्न व आवश्यक चीजों का स्टोरेज करके रख लिया और उन सामानों को मनचाहे दामों में बेचा जिससे कि लोगों की आर्थिक स्थिति कमजोर हुई।

बच्चों द्वारा खींची गयी तस्वीरें

संतोष कुंवर

मनीषा

शीला बैरवा

प्रियंका

र

धनराज सैनी

गजल

विशाल

हिमांशी

पूजा चौधरी

रूकसाना

संतोष कुंवर

विशाल

विश्राम मीणा

संतोष कुंवर

हिमांशी

ऋषभ शर्मा

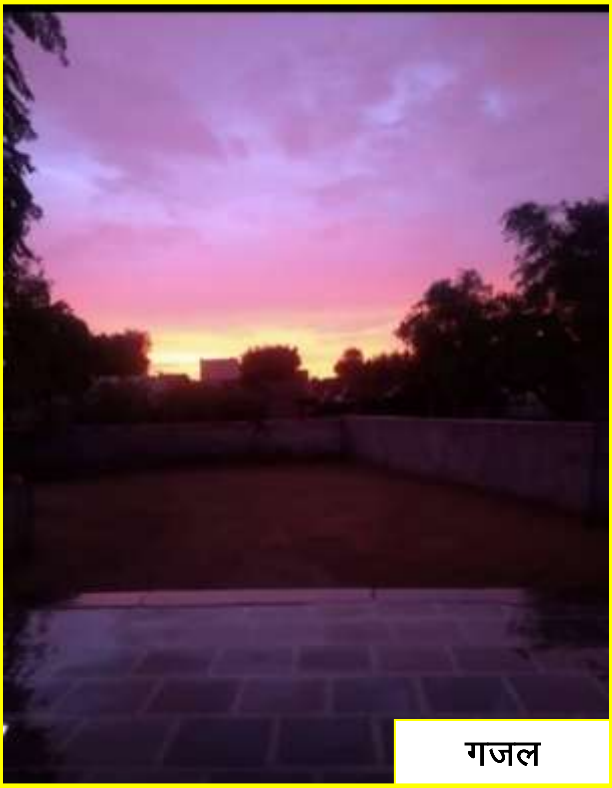

गजल

संतोष

पूजा

सरोज

ऋषभ शर्मा

संतोष कुंवर

लाली निनामा

सरोज गुर्जर

कार्यशाला-4 में प्रतिभागी बच्चों के नामों की सूची

क्रमांक	नाम	संस्था का नाम
1	रेनू मेघवंशी	अंताक्षरी, जयपुर
2	आशीष मेघवंशी	अंताक्षरी, जयपुर
3	रोशन बैरवा	अंताक्षरी, जयपुर
4	पूजा चौधरी	अंताक्षरी, जयपुर
5	मोहित बिजारणिया	अंताक्षरी, जयपुर
6	पूजा चौधरी	अंताक्षरी, जयपुर
7	प्रियंका भंवरीया	अंताक्षरी, जयपुर
8	मनीषा चौधरी	अंताक्षरी, जयपुर
9	मुकेश कुमार चौधरी	अंताक्षरी, जयपुर
10	विजय बिजारणिया	अंताक्षरी, जयपुर
11	हिमांशी शर्मा	ग्राम चेतना केंद्र, जयपुर
12	परिक्षित खंडल	ग्राम चेतना केंद्र, जयपुर
13	चेतन प्रकाश यादव	ग्राम चेतना केंद्र, जयपुर
14	अनिता यादव	ग्राम चेतना केंद्र, जयपुर
15	यतेन्द्र यादव	ग्राम चेतना केंद्र, जयपुर
16	मनीषा सैन	ग्राम चेतना केंद्र, जयपुर
17	विशाल यादव	ग्राम चेतना केंद्र,जयपुर
18	हर्षिता यादव	ग्राम चेतना केंद्र, जयपुर
19	गौरव शर्मा	शिक्षा रोजगार केन्द्र प्रबंधक समिति, झूंझनू

20	हेमलता	शिक्षा रोजगार केन्द्र प्रबंधक समिति, झूंझनू
21	नितिन कुमार	शिक्षा रोजगार केन्द्र प्रबंधक समिति, झूंझनू
22	राहुल सैनी	शिक्षा रोजगार केन्द्र प्रबंधक समिति, झूंझनू
23	प्रियंका	शिक्षा रोजगार केन्द्र प्रबंधक समिति, झूंझनू
24	मनीषा बैरवा	शिव शिक्षा समिति, टोंक
25	ऋषभ शर्मा	शिव शिक्षा समिति, टोंक
26	पार्वती	शिव शिक्षा समिति, टोंक
27	भावना चौधरी	शिव शिक्षा समिति, टोंक
28	दीपक इरवाल	शिव शिक्षा समिति, टोंक
29	सोनू बैरवा	शिव शिक्षा समिति, टोंक
30	दीपक वैष्णव	शिव शिक्षा समिति, टोंक
31	शिवानी बैरवा	शिव शिक्षा समिति, टोंक
32	मनीषा बैरवा	शिव शिक्षा समिति, टोंक
33	गिरिजा योगी	शिव शिक्षा समिति, टोंक
34	रवीना बैरवा	शिव शिक्षा समिति, टोंक
35	मोहित सिंह	सतत विकास संस्थान, पाली
36	भूमिका कंवर	उरमूल सीमांत समिति, बज्जू
37	विश्वजीत सिंह	उरमूल सीमांत समिति, बज्जू
38	गज़ल	उरमूल सीमांत समिति, बज्जू
39	मिलन	उरमूल सीमांत समिति, बज्जू

कार्यशाला में जुड़ी सहयोगी संस्थाओं का परिचय

अंताक्षरी

अंताक्षरी फाउंडेशन को भारतीय ट्रस्ट अधिनियम 1882 के तहत दिसंबर 1996 में कुछ प्रेरित और प्रतिबद्ध युवाओं द्वारा एक धर्मार्थ ट्रस्ट के रूप में पंजीकृत किया गया था, जो लंबे समय से ग्रामीण विकास में लगे हुए थे। 'अंताक्षरी' शब्द का अर्थ है 'एक प्रक्रिया जो कभी समाप्त नहीं होती' और एक प्रक्रिया जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक चलती है। संगठन का प्रयास संगठन के भीतर और बाहर एक धर्मनिरपेक्ष, गैर-भेदभाव पूर्ण, गैर-भयभीत, पारदर्शी और गैर-श्रेणीबद्ध वातावरण के प्रचार में योगदान देना है। अंताक्षरी फाउंडेक्शन का मानना है कि बच्चों के मुद्दों पर संगठनात्मक रूप से काम करने की आवश्यकता है। इसी पहल के तहत वर्ष 2008 में ''राजस्थान बाल अधिकार संरक्षण साझा अभियान'' के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका रही। वर्तमान में अन्ताक्षरी फाउंडेशन जयपुर, बूंदी, पाली, अजमेर में तथा जयपुर रेलवे जंक्शन पर ''रेलवे चाइल्ड लाइन (1098)'' भी चला रहा है।

ग्राम चेतना केंद्र

ग्राम चेतना केंद्र की स्थापना 1986 में सामाजिक रूप से जागरूक व्यक्तियों के एक समूह द्वारा की गई थी। संगठन को सोसायटी पंजीकरण अधिनियम के तहत एक स्वैच्छिक, गैर-सरकारी संगठन के रूप में पंजीकृत किया गया था और उनके परिसर से औपचारिक संचालन शुरू किया, जो खेड़ी मिल्क गांव में परियोजना क्षेत्र के केंद्र में स्थित है।

शिक्षा रोजगार केन्द्र प्रबंधक समिति, झूंझनू

1987 में स्थापित, शिक्षत रोजगार केंद्र प्रबंधक समिति (SRKPS) की स्थापना राजस्थान के झुंझुनू जिले में लोगों के जीवन में बदलाव लाने के लिए तथा बेरोजगारी को कम करने के मिशन के रूप में की गई थी। (SRKPS) मुख्य रूप से लोगों के लिए सामाजिक, संस्थागत और संपत्ति के आधार को सुविधाजनक बनाने के लिए काम करता है। वर्तमान में (SRKPS) झुंझुनू जिले में चाइल्ड लाइन का संचालन कर रहे हैं, साथ ही राजस्थान में कोटपा कानून को प्रभावी रूप से क्रियांन्वित करने तथा ग्राम पंचायतों को तम्बाकू मुक्त बनाने के लिए कार्यरत है।

राजस्थान बाल अधिकार संरक्षण साझा अभियान की पहल

''दशम एलाइंस''

रिसोर्स इन्स्टीट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स, राजस्थान

932, किसान मार्ग, बरकत नगर, टोंक रोड, जयपुर

Email ID – rihr.rajasthan@gmail.com

सम्पर्क–0141–3532799, 9460387130, 7878055137